Sixteenth Loksabha

an>

Title: Regarding training centre in Uttarakhand for aspirants of Armed/Paramilitary forces.

डॉ. रमेश पोखरियाल निशंक (हरिद्वार) : महोदया, दो-दो विदेशी सीमाओं से घिरा उत्तराखण्ड देव भूमि के साथ-साथ वीर भूमि है। यहाँ औसतन एक परिवार से एक व्यक्ति सेना में भर्ती होकर जहाँ राष्ट्र की सीमाओं पर अपनी कुर्बानी देता है, वहीं दूसरी पंक्ति में उसकी माँ, बहनें भी सैनिक की ही तरह देशभक्ति और राष्ट्रभक्ति का प्रमाण देती हैं। चाहे देश की आज़ादी से पहले हो, चाहे देश की आज़ादी के बाद, चाहे चन्द्रशेखर आजाद हों, चाहे सुभाष चन्द्र बोस, उनके कैम्प हमेशा लगा करते थे और हर परिवार से एक व्यक्ति सेना में भर्ती होकर राष्ट्र की सीमाओं पर अपनी कुर्बानी देता है।

महोदया, पेशावर काण्ड का महानायक वीर चंद्र सिंह गढ़वाली हो, चाहे वर्ष 1962, वर्ष 1965, वर्ष 1971 का युद्ध हो, चाहे कारगिल का युद्ध हो, चाहे मुंबई के ताज होटल पर आतंकवादियों का निशाना हो, चाहे गुजरात के अक्षरधाम मंदिर का विषय हो, चाहे दंतेवाड़ा का प्रकरण हो, चाहे संसद पर आतंकी हमले का विषय हो, पहली पंक्ति में खड़े होकर के उत्तराखण्ड के सपूतों ने अपनी कुर्बानी देकर के अपनी श्रेष्ठता दर्ज की है।

महोदया, अभी कुछ दिन पहले मैं यूरोपीय देशों की यात्रा पर था। नायक दरबान सिंह नेगी एवं राइफलमैन गब्बर सिंह नेगी को फ्रांस में अद्भुत वीरता के लिए विक्टोरिया क्रास से सम्मानित किया गया। इतना ही नहीं मेजर सोमनाथ शर्मा और मेजर शैतान सिंह को परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया। मैंने अभी बेल्जियम में देखा कि वहाँ प्रथम विश्व युद्ध का जो गेट/स्मारक है, वहाँ हमारे भारतीय और उत्तराखण्ड के वीर सैनिकों की वीरता की गाथा दर्ज है।

महोदया, मेरा यह कहना है कि जिस क्षेत्र में ऐसे सपूत हैं, जिनकी धमनियों में देशभक्ति का खून बहता हो, जो यह कहते हों कि:

युगों-युगों से यही हमारी बनी हुई परिपाटी है,

खून दिया है, मगर नहीं दी कभी देश की माटी है।

पूरे हिमालय क्षेत्र में ऐसे वीर पुरूषों को सेना और अर्द्धसैनिक बलों में नि:शुल्क प्रशिक्षण हर हालत में दिया जाना चाहिए। मैं सरकार से पुरजोर माँग करता हूँ कि उत्तराखण्ड और हिमालय क्षेत्र के जितने भी ऐसे वीर नौजवान हैं, उनको उन्हीं स्थानों पर प्रशिक्षण दिया जाए। इससे बेराजगारी दूर होगी, वहाँ गाँव खाली हो रहे हैं, उनसे पलायन रूकेगा और राष्ट्र को ऐसे राष्ट्रभक्त नौजवान मिलेंगे, जो वीरता को शिखरता तक पहुँचायेंगे। मैं आपके माध्यम से सरकार से यही माँग करता हूँ। धन्यवाद।

माननीय अध्यक्ष: श्री शरद त्रिपाठी, श्री अजय मिश्रा टेनी, श्री भैरों प्रसाद मिश्र, कुँवर पुष्पेन्द्र सिंह चन्देल और श्री रवीन्द्र कुमार जेना को डॉ. रमेश पोखरियाल निशंक द्वारा उठाए गए विषय के साथ संबद्ध करने की अनुमति प्रदान की जाती है।